IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, September 2022
Impact Factor: 6.252

मार्कण्डेय के कथा साहित्य में ग्रामीण चेतना : सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में

Dr. Jay Prakesh Yadav[1] and Sunil Kumar Yadav[2]
Research Supervisor and Associate Professor[1]
Research Scholar, Department of Hindi[2]
Multani Mal Modi (PG) College, Modinagar, Ghaziabad, Uttar Pradesh, India[1]
Chaudhary Charan Singh University, Meerut, Uttar Pradesh, India[2]

शोध सारांश :

प्रस्तुत शोध के माध्यम से यह स्पस्ट होता है कि किसी भी मनुष्य में चेतना दो प्रकार की होती है– व्यक्तिगत चेतना एवं सामाजिक चेतना। व्यक्तिगत चेतना में प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं का बोध होता है, उसका अपना खुद का अस्तित्व होता है, एवं वह स्व उन्नति में प्रयुक्त होता है। लेकिन जब कोई अपने 'स्व' से उठकर समग्र समाज के बारे में सोचता है तो वह सामाजिक चेतना होती है। सामाजिक चेतना के बारे में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कहना है–**"शताब्दियों का अनुभव यह बताता है कि उत्तम साहित्य की सृष्टि करना बड़ी बात नहीं है। सम्पूर्ण समाज को सचेतन बना देना भी परम आवश्यक है जो उत्तम साहित्य को अपने जीवन में उतार सके।** तात्पर्य यह है कि साहित्यकार का दायित्व केवल अच्छे साहित्य की रचना नहीं है बल्कि समाज को जागृत करना भी होता है।

मुख्य शब्द :– मार्कण्डेय, कथा साहित्य, ग्रामीण, चेतना, सामाजिक, सांस्कृतिक, परिप्रेक्ष्य साहित्य आदि।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. मार्कण्डेय से साक्षात्कार, दि. 26/11/2006
[2]. डॉ. सुरेंद्र प्रसाद, मार्कण्डेय का रचना संसार, पृ. 13
[3]. कुछ यादें कुछ बातें, मार्कण्डेय : एक प्रतिबद्ध स्वप्नदर्शी, पृ. 77
[4]. मार्कण्डेय होने का अर्थ, कल के लिए, अक्टूबर–दिसंबर 1996 पृ. 13
[5]. मार्कण्डेय, मार्कण्डेय की कहानियाँ, माही, भूमिका, पृ. 323
[6]. प्रतिमान, नवंबर 1978 (राजेन्द्र कुमार मेहरोत्रा की मार्कण्डेय से एक बातचीत), उद्धृत नई कहानी के कहानीकारों की आलोचनात्मक दृष्टि, पृ. 193–194
[7]. 'हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्याएँ', डॉ0 ज्ञान अस्थाना, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा–2, 1979, पृष्ठ 26
[8]. 'सिद्धान्त कौमुदी', पाणिनी, सम्पादक आचार्य रघुनाथ शास्त्री, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, 2010, पृष्ठ 38

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, September 2022
Impact Factor: 6.252

[9]. 'भारतीय ग्राम', श्यामाचरण दुबे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1996, पृष्ठ 9

[10]. 'ग्रामीण समाजशास्त्रः साहित्य के परिप्रेक्ष्य में', उद्धृत, विश्वम्भरदयाल गुप्त, सीता प्रकाशन, कानपुर, 1980, पृष्ठ 27

[11]. 'भारतेंदु हरिश्चंद्र के साहित्य में भाव बोध स्थापनाएं और प्रतिस्थापनाएं', डा. वीरेन्द्र अग्रवाल, 1996, पृष्ठ

[12]. 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में ग्राम्य जीवन और संस्कृति', डॉ0 राजेन्द्र कुमार, परिमल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1988, पृष्ठ 64

[13]. 'सवरइया', 'मार्कण्डेय की कहानियाँ', मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002 पृष्ठ 24

[14]. 'एक दिन की डायरी', 'मार्कण्डेय की कहानियाँ', मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002 पृष्ठ 1

[15]. 'गुलरा के बाबा', 'मार्कण्डेय की कहानियाँ', मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002 पृष्ठ 26

[16]. 'सेमल का फूल', मार्कण्डेय, पृष्ठ 44